

श्रीवैकटेश्वर सुप्रभातम्





श्रीरसु

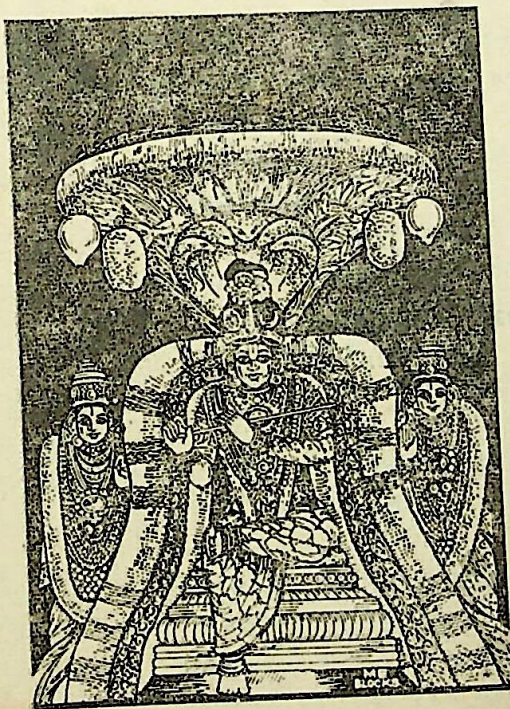
LIBRARY

No.

श्रीवेंकटेश्वर सुप्रभातम्

BANARAS

(सटीक)



कापी राइट]

1972

[दाम 1-00

PUBLISHERS;

Gollapudi Veeraswamy Son

RAJAHMUNDRY-I (A.P.)



PRINTERS:

Sri Latha Printing Works

KOVVUR (W. G. Dt.) :A. P.



All Rights Reserved

श्रीवेंकटेश्वर सुप्रभात की महत्ता

श्रीवेंकटेश्वर सुप्रभातके स्तोत्र में, सुप्रभात, स्तोत्र, प्रपत्ति तथा मंगलाशासनम् नामक चार भाग हैं। सुप्रभातम् भाग में जगत का पालन-हार श्रीवेंकटेश्वर की जगाने के श्लोक संग्रहित हैं। प्रतिदिन प्रभात के समय सब देवगण (ब्रह्मा, शंकर आदि) श्रीवेंकटेश्वर की प्रशंसा करते हुए जागरण के गीत गाते हैं। जो लोग प्रातःकाल उठकर नियमानुसार श्रद्धा से सुप्रभात के श्लोकों का अध्ययन करते हैं, उनको विशेष ज्ञान तथा प्रतिभा प्राप्त होती है।

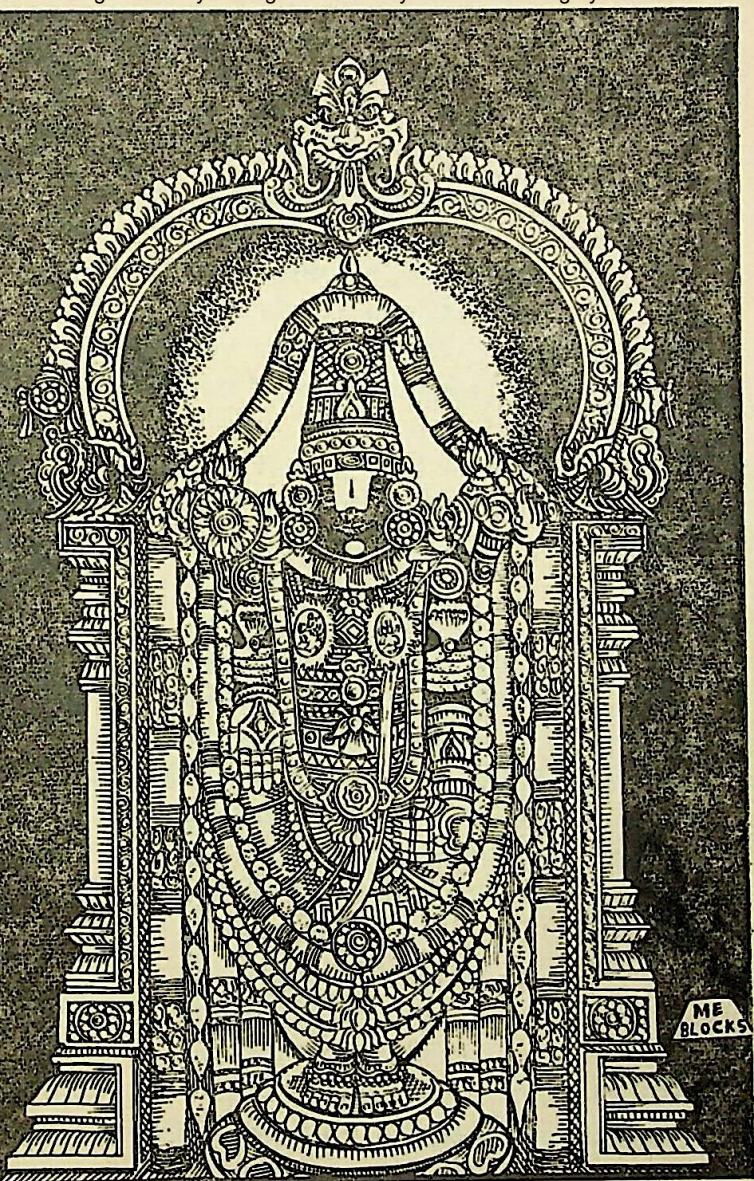
दूसरा भाग है "स्तोत्र"। इस में मंगल स्वरूप श्रीवेंकटेश्वर की महत्ता तथा उनके अवतारों का वर्णन किया गया है। उनकी स्तुति करते हुए श्लोक लिखे गये हैं कि हे करुणामय श्रीवेंकटेश्वर मेरे पापों को दूर करो। मैं पाप रूपी कीचड़ में फँसा हुआ हूँ। मेरी रक्षा करो। मैं अवोध हूँ। हे प्रभो! मुझे आप के कमलचरणों के पास पहुँचा दो। मैं सर्वदा आपकी सेवा करूँगा जिस से मुझे मोक्ष प्राप्त होगा। जो भक्तलोग प्रतिदिन प्रभातके समय ये श्लोक भक्तिसे याद करते हैं, उनके पाप अवश्य दूर हो जाते हैं।

तीसरा भाग है "प्रपत्ति"। इस भाग में श्रीवेंकटेश्वर के कमल चरणों में शरण देनेकी प्रार्थना की गयी है। प्रपत्तिका अर्थ है शरणागति। श्रीवेंकटेश्वर की दया प्राप्त करने के लिए प्रपत्ति ही उत्तम साधन है। महान भक्तों का कर्तव्य है कि निस्स्वार्थ भाव से काम करके सारा भार भगवान पर छोड़कर उनकी शरण में जाना है। नारद, अंबरीष आदि ने ऐसा ही किया।

चौथा भाग है "मंगलाशासनम्"। इस में कल्याणकारी श्रीवेंकटेश्वर का मंगल होने के लिए स्तुति की गयी है। इस में श्रीवेंकटेश्वरकी महत्ता का वर्णन किया गया है। जो भक्तगण प्रतिदिन नियमानुसार श्रद्धा से प्रभात समय सुप्रभातके श्लोकों का अध्ययन करते हैं वे पापों से मुक्त होकर मोक्ष पाते हैं।

विषय-सूची

	पृष्ठ संख्या
श्रीवेंकटेश्वर सुप्रभातम्	7
श्रीवेंकटेश्वर स्तोत्रम्	15
श्रीवेंकटेश्वर प्रपत्तिः	19
श्रीवेंकटेश्वर मङ्गलाशासनम्	24
श्रीवेंकटेश्वर चतुर्दशमंजरिका स्तोत्रम्	27
श्रीनिवासावेतार के देशकाल का निर्णय	29
श्रीवेंकटेश्वर शरणागति स्तोत्रम्	30
श्रीवेंकटेश्वर वज्रकवच स्तोत्रम्	31
शुकमुनि कृत नटनादिकम्	32
श्रीकृष्णाष्टकम्	33
श्रीवेंकटेश्वर द्वादशमंजरिका स्तोत्रम्	34
श्रीहयंष्वकम्	36
श्रीगोविन्दाष्टकम्	37
देवकृत लक्ष्मी स्तोत्रम्	39
श्रीमहालक्ष्म्याष्टकम्	41
नित्यकटल पूजा और दर्शन वगैरह	42



श्रीरस्तु
श्रीवेंकटेश्वर सुप्रभातम्

कौशल्या सुप्रजा राम पूर्वसिन्ध्या प्रवर्तते ।

उत्तिष्ठ नरशार्दूल कर्तव्यं दैवमाह्निकम् ॥

हे राम ! कौशल्या के सुपुत्र, जाग उठो । प्रातःकाल हो रहा है ।
देव पूजा का प्रबन्ध करना है जो दैनिक कार्य हो । हे पुरुषोत्तम, उठो ।
जाग उठो ।

उत्तिष्ठोत्तिष्ठ गोविन्द उत्तिष्ठ गरुडध्वज ।

उत्तिष्ठ कमलाकान्त त्रैलोक्यं मङ्गलं कुरु ॥

हे गोविन्द ! गरुडध्वज ! हे लक्ष्मीपति ! उठो, जाग उठो । हे
प्रभो ! तीनों लोक का शुभ तथा मंगल करो ।

मातः समस्त जगतां मधुकैटभारेः

वक्षोविहारिणि मनोहर दिव्यमूर्ते ।

श्रीस्वामिनि श्रितजन प्रियदानशीले

श्रीवेंकटेश दयिते तव सुप्रभातम् ॥

हे तीनों लोकों की माता ! विष्णु भगवान, जिस ने मधु तथा कैटभ
नामक राक्षसों का संहार किया, के वक्षस्तल में विहार करनेवाली दिव्य
मूर्ति हमारी शुभ कामना चाहनेवाली माता, शरणागत लोभों के अभीष्ट
सिद्ध करनेवाली माता, हे वेंकटेश्वरकी पत्नी, लक्ष्मी ! तुम्हारा सुप्रभात हो ।

तव सुप्रभात मरविन्द लोचने

भवतु प्रसन्न मुखचंद्र मंडले ।

विधिशंकरेन्द्र वनिताभिरर्चिते

वृषशैलनाथ दयिते दयानिधे ॥

हे कमलाक्षी ! चंद्रमुखी, ब्रह्मा, महेश्वर तथा इन्द्र की पत्नियाँ
सरस्वती, पार्वती और शचीदेवी से पूज्य दिव्यमूर्ति, वृषभाचलके अधिपति
श्रीवेंकटेश्वर की पत्नी हे लक्ष्मी ! तुम्हारा सुप्रभात हो ।

अव्यादि सप्तऋषयः सप्तपुत्रास्य सन्ध्याम्

आकाशसिन्धु कमलानि मनोहराणि ।

आदाय पादयुग मर्चयितुं प्रपन्नाः

शेषाद्रिशेखरविभो तव सुप्रभातम् ॥

अत्रि आदि सप्तमहाऋषि प्रभात समय संध्यावंदन का कार्यक्रम पूरा करके, आकाशगंगा से दिव्य सुंदर कमल फूलों को ले आकर तुम्हारे पादपद्मों की पूजा करने के लिए तुम्हारे शरण में आये हैं । शेषावन्त का शिखर पर शोभित श्रीवेंकटेश्वर तुम्हारा सुप्रभात हो ।

पञ्चाननाब्ज भवषण्मुख वासवाद्याः

त्रैविक्रमादि चरितं विबुधाः स्तुवंति ।

भाषावतिः पठति वासरेणुद्विमारात्

शेषाद्रिशेखरविभो तव सुप्रभातम् ॥

ईश्वर, ब्रह्मा, कार्तिकेय, इन्द्र आदि देवतागण त्रैविक्रमावतार आदि की प्रशंसा करते हैं । बृहस्पति पंचांग पढ़ते हैं जिस में तिथि, वार, नक्षत्र, योग, करण आदि पाँच अंग होते हैं । हे शेषाचलपति ! श्रीवेंकटेश्वर तुम्हारा सुप्रभात हो ।

ईषत्प्रफुल्ले सरसीरुह नारिकेल

पूगदृमादि सुमनोहर पालिकानाम् ।

आवाति मंदमनिलः सह दिव्यगन्धैः

शेषाद्रिशेखरविभो तव सुप्रभातम् ॥

अधखिले कमल फूलों, नारियल तथा सुपारी के सुंदर कलियों की मनोहर सुगंधित हवा धीरे धीरे चल रही है । हे शेषाचलपति श्रीवेंकटेश्वर तुम्हारा सुप्रभात हो ।

उन्मील्य नेत्रयुगमुत्तम पंजरस्थाः

पात्रावशिष्ट कदलीफल पायसानि ।

भुक्त्वा सलीलमथकेलि शुकाः पठन्ति

शेषाद्रिशेखरविभो तव सुप्रभावम् ॥

सुन्दर पंजरों में तोने आंखें खोलकर, पात्रों में बचेकुचे केले खाकर और खीर पीकर, आनन्द तथा उत्साह से आपकी लीलाएँ गाते हैं। हे शेषाचल के अधिपति श्रीवेंकटेश्वर तुम्हारा सुप्रभात हो।

तन्त्रीप्रकर्ष मधुर स्वनया विपञ्च्या
गायत्यनन्त चरितं तव नारदाऽपि ।

भाषाममग्रममकृत्कर चाररम्यं
शेषाद्रिशेखरविभो तव सुप्रभातम् ॥

तन्त्रियों को हिलाने में मधुर स्वर देनेवाली विपञ्ची नामक वीणा से नारदमहर्षि आपके अनन्त दिव्य चरित्र मधुर और समग्र भाषा में गाते हैं। हे शेषाचलके अधिपति! श्री वेंकटेश्वर तुम्हारा सुप्रभात हो।

भृंगावली च मकरंद रसानुविद्ध
झुंकारगीत निनदैः सह सेवनाय ।
निर्याप्युतांत सरसीकमलोदरेभ्यः
शेषाद्रिशेखर विभो तव सुप्रभातम् ॥

आसपास के सरोवरों के कमलफूलों से भ्रमरों के समूह मकरंद पी कर झुंकार गीत गाते हुए, तुम्हारी सेवा करने के लिए बाहर आते हैं। हे शेषाचलपति तुम्हारा सुप्रभात हो।

योषागणेन वरदधिन विमथ्यमाने
घोषालयेषु दधिमथन तीव्र घोषाः ।
रोषात्कलि विदधते ककुभश्च कुम्भाः
शेषाद्रिशेखरविभो तव सुप्रभातम् ॥

अहीरों के घरों में गोपिका स्त्रियाँ बड़े जोर से दही का मथन करती हैं जिससे एक प्रकार की तीव्र ध्वनि उत्पन्न होती है। ऐसा मालूम होना है कि उस ध्वनि शक्ति दिशाएँ तथा दही के घड़ों में एक प्रकार का तीव्र कलह चल रहा हो। शेषाचल शिखर पर विराजमान होनेवाले श्रीवेंकटेश्वर तुम्हारा सुप्रभात हो।

पद्मेशमित्र शतपत्र गतालिङ्गार्तिः
 हतुं श्रिय कुवलयस्य निजांगलक्ष्म्याः ।
 भेरी निनादमिव विभ्रति तीव्रनादम्
 शेषाद्रिशेखरविभो तव सुप्रभातम् ॥

सूर्य भगवान के मित्र शतदलवाले कमल कुनों में मे भ्रमरों का समूह ऐसी गंभीर ध्वनि कर रहा है कि ये भ्रमर अपने शरीर की कांति से नीलकमल की कांति को हराना चाहते हो । हे शेषाचलपति तुम्हारा सुप्रभात हो ।

श्रीमन्नभीष्ट वरदाखिल लोकवंधो
 श्री श्रीनिवास जगदेक दयंकसिंधो ।
 श्रीदेवतागृह भुजांतर दिव्यमूर्ते
 श्रीवेंकटाचलपते तव सुप्रभातम् ॥

अभीष्ट सिद्धि करनेवाले हे प्रभो ! सर्वलोक मित्र श्री श्रीनिवासा हे करुणानिधि, लक्ष्मी के निवासवाले वक्ष में शोभित दिव्यमूर्ति श्री वेंकटाचलपति, तुम्हारा सुप्रभात हो ।

श्रीस्वामिपुष्करिणिकाप्लव निर्मलांगाः
 श्रेयोर्थिना हरविरिञ्चि सनंदनाद्याः ।
 द्वारे वसन्ति वरवेत्त हतोत्तमांगाः
 श्रीवेंकटाचलपते तव सुप्रभातम् ॥

हे स्वामी तुम्हारी पुष्करिणी में स्नानकर निर्मल शरीर पाये हुए श्रेयोभिलाषी महेश्वर, ब्रह्मा, सनन्दन आदि महान लोग द्वार पर खडे हुए हैं । वे लोग तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहे हैं । हे वेंकटाचलपति ! तुम्हारा सुप्रभात हो ।

श्रीशेषशैल गरुडाचल वेंकटाद्रि
 नारायणाद्रि वृषाद्रि वृषभाद्रि मुख्याम् ।
 आख्यां त्वदीय वसते रनिशं वदन्ति
 श्रीवेंकटाचलपते तव सुप्रभातम् ॥

हे स्वामी ! तुम जिस पर्वत पर रहते हो, उस पर्वत को श्रीशेषशैल' गरुडाचल, वेंकटाचल, नारायणाद्रि, वृषभाद्रि, वृषाचल आदि कई नामों से लोग पुकारते हैं । हे श्रीवेंकटाचलपति तुम्हारा सुप्रभात हो ।

सेवापराः शिवसुरेश कृशानुधर्म
रक्षोबुनाथ पवमाने धनाधिनाथाः ।
वद्धांजलि प्रविलसन्निज शीर्षदेशाः
श्रीवेंकटाचलपते तव सुप्रभातम् ॥

हे प्रभो ! तुम्हारी पूजा करने के लिए महेश्वर, इन्द्र, अग्नि, यमराज, नैऋति, वरुण, वायु और कुवेर ये अष्ट दिक्पालक अपने हाथों को जोड़कर तुम्हारी प्रताक्षा कर रहे हैं । श्रीवेंकटाचलपति तुम्हारा सुप्रभात हो ।

धाटीपु ते विहगरीज मृगाधिराज
नगाधिराज गजराज हयाधिराजाः ।
स्वस्वाधिकार महिमादिकमर्थयन्ते
श्रीवेंकटाचलपते तव सुप्रभातम् ॥

गरुड, सिंह, आदिशेष, ऐरावत आदि अपने अपने अधिकार और महिमा को तुम्हारे भ्रमण के समय अपने को देने के लिए प्रार्थना करते हैं । हे वेंकटाचलपति तुम्हारा सुप्रभात हो ।

सूर्येन्दु भौम बुध वाक्पति काव्यशौरि
स्वर्भानुकेतु दिविषत्परिषत्प्रधानाः ।
त्वेद्वागदास चरमावधि दासदासाः
श्रीवेंकटाचलपते तव सुप्रभातम् ॥

देवसभा के प्रमुख प्रतिनिधि नवग्रह हैं । सूर्य, चन्द्र, अंगारक, कुज, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, राहु और केतु हैं । ये सब तुम्हारे दासों के दास बने हुए हैं । हे वेंकटाचलपति ! तुम्हारा सुप्रभात हो ।

त्वत्पादधूलि भरित स्फुरितोत्तमांगाः
स्वर्गागमं निरपेक्ष निजांतरगाः ।
कल्याणमाकलनयाऽऽकुलतां लभते
श्रीवेंकटाचलपते तव सुप्रभातम् ॥

तुम्हारे भक्तों के मिर तुम्हारे पदरज से विराजमान और शोभाय-
मन है । उन के मन में किसी प्रकार की चाह नहीं है । स्वर्ग या मोक्ष
पाने की अभिलाषा भी नहीं है । ये भक्तगण केवल अन्य कला के आगमन
की चिन्ता में परेशान है । हे वेंकटाचलपति तुम्हारा सुप्रभात हो ।

त्वद्गोपुराग्र शिखराणि निरीक्षमाणाः
स्वर्गागमं पदवीं परमांश्रयन्तः ।
मर्त्याः मनुष्य भूवने मतिमाश्रयन्ते
श्रीवेंकटाचलपते तव सुप्रभातम् ॥

हे प्रभो ! तुम्हारे मन्दिर के गोपुर शिखरों को देखकर ऐसे पवित्र
लोग भी, जिन को पोषाद प्राप्त हुए हों, इसी मर्त्यलोक में मानव रूप में
पैदा होकर रहना चाहते हैं । हे वेंकटाचलपति तुम्हारा सुप्रभात हो ।

श्रीभूमिनायक दयादि गुणामृताब्धे
देवाधिदेव जगदेक शरण्यमूर्ते ।
श्रीमन्ननंत गरुडामिरचितांघ्रे
श्रीवेंकटाचलपते तव सुप्रभातम् ॥

श्रीदेवी तथा भूदेवी के पति, तुम दया, ममता, करुणा आदि सद्गुणों
के अमृतसागर हो । समस्त देवताओं के सम्राट हो । सारे संसार के
शरणागत रक्षक हो । श्रीसंपन्न, आदिशेष, गरुड आदि से अचिन्त चरण-
वाले, हे वेंकटाचलपते ! तुम्हारा सुप्रभात हो ।

श्रीपद्मनाभ पुरुषोत्तम वासुदेव
वैकुण्ठ माधव जनार्दन चक्रपाणे ।
श्रीवत्सचिह्न शरणागत पारिजात
श्रीवेंकटाचलपते तव सुप्रभातम् ॥

हे पद्मनाभ, पु पोट्तम, वासुदेव, वैकुण्ठवासा, माधव, जनार्दन, चक्रपाणा, श्रीवत्सचिह्न शरणागतों के लिए पारिजात, हे वेंकटाचलपति तुम्हारा सुप्रभात हो ।

कंदर्पदर्पहर सुंदर दिव्यमूर्ति
कांताकुचांबुरुह कुटुमल लोल दृष्टे ।
कल्याण निर्मल गुणाकर दिव्यकीर्ति
श्रीवेंकटाचलपते तव सुप्रभातम् ॥

रूपसौंदर्य में कामदेव का घमंड चूरधूर करनेवाले हे दिव्यमूर्ति ! लक्ष्मीदेवी के कुचों पर, जा कमल कलियोंके समान हैं. आभक्ति दिखानेवाले और कल्याणप्रद निर्मल गुणोंवाले, दिव्य कीर्तिवाले हे श्रीवेंकटाचलपति तुम्हारा सुप्रभात हो ।

मीनाकृते कमठ कोल नृसिंहवर्णिन्
स्वामिन् परश्वथ तपोधन रामचन्द्र ।
शेषांश राम यदुनन्दन कल्कि रूप
श्रीवेंकटाचलपते तव सुप्रभातम् ॥

हे मत्स्यावतारा, कूर्मावतारा, नृसिंहावतारा, हे वामन, परशुगम, श्रीराम, बलराम, श्री कृष्ण, हे कल्किमूर्ति, श्रीवेंकटाचलपति तुम्हारा सुप्रभात हो ।

एलालवंग भवसार सुगंधितीयं
दिव्य वियत्सरित हेम घटेषु पूर्णम् ।
घृत्वाद्य वैदिक शिखामणयः प्रहृष्टाः
तिष्ठन्ति वेंकटपते तव सुप्रभातम् ॥

इलायची, लौंग, कर्पूर आदि सुगंध द्रव्य जल आकाशगंगा से सौने के घड़ों में भरकर श्रेष्ठ देवगण ले आये हैं। वे आप की सेवा के लिए व्याकुल हैं। हे वेंकटाचलपति ! तुम्हारा सुप्रभात हो।

भास्वानुदेति विकचानि सरोरुहाणि
संपूरयन्ति निनदैः ककुभो विहंगाः ।
श्रीवैष्णवीः सततमचित मंगलास्ते
धामाश्रयन्ति तत्र वेंकट सुप्रभातम् ॥

सूर्योदय हो रहा है। कमल विकसित हो रहे हैं। पक्षिगण अपने कलरवसे चारों ओर प्रतिध्वनित कर रहा है। विष्णुभगवान सदा तुम्हारा आशीश चाहते हैं। वे तुम्हारे सन्निधि में तुम्हारी प्रतीक्षा में संलग्न हैं। हे श्रीवेंकटाचलपति तुम्हारा सुप्रभात हो।

ब्रह्मादयस्सुरवरा स्समर्हयस्ते
संतस्सनन्दन मुखास्त्वथ योगिवर्याः ।
धामांतिके तव हि मंगल वस्तुहस्ताः
श्रीवेंकटाचलपते तव सुप्रभातम् ॥

महाऋषि समेत ब्रह्मा आदि देवता लोग, मत्पुरुष लोग, संत, सनंदन आदि योगीश्वर पूजाद्रव्य अपने हाथों में लिये तुम्हारे मंदिर के सामने खड़े हुए हैं। हे वेंकटाचलपति तुम्हारा सुप्रभात हो।

लक्ष्मीनिवास निरवद्य गुणकसिंधो
संसार सागर समुत्तरणैक सेतो ।
वेदांतवेद्य निजवैभव भक्तभोग्य
श्रीवेंकटाचलपते तव सुप्रभातम् ॥

हे लक्ष्मी के निवास, गुणनिधि, भवसागर को पार करने के लिए एकमात्र सेतु हो तुम। वेदांतवेद्य ! सहजसंपन्नवाले, भक्तों के योग्य ! श्रीवेंकटाचलपति ! तुम्हारा सुप्रभात हो।

इत्थं वृषाचलपते गृह सुप्रभातम्
 ये मानवाः प्रतिदिनं पठितुं प्रवृत्ताः ।
 तेषां प्रभात समये स्मृतिरगभाजां
 प्रजां परार्थं सुलभां परमां प्रसूते ॥

इस प्रकार वृषाचलपति श्रीवेंकटेश्वर का सुप्रभात प्रतिदिन नियमा-
 सार जो मानव पढ़ते हैं, उन भक्तों को श्रीवेंकटेश्वर मोक्ष, परमार्थ तथा
 दिव्य ज्ञान प्रदान करते हैं ।

॥ इति श्रीवेंकटेश्वर सुप्रभातम् ॥

श्रीरस्तु

श्रीवेंकटेश्वर स्तोत्रम्

कमलाकुचं चूचुक कुंकुमतो
 नित्यतारुणितांतुल नीलतनो ।
 कमलायतलोचन लोकपते
 विजयीभव वेंकटशैलपते ॥

श्रीदेवी के स्तन के ऊपरी भाग की रोरी से लाल बने अनुपम नील
 देह वाले, कमल गुंछों के समान विस्तृत नयनवाले, हे जगन्नायक श्रीवेंकटा-
 चलपति ! तुम्हारी जय हो ।

स चतुर्मुख षण्मुख पञ्चमुख
 प्रमुखाखिल दैवतमौलिमणे ।
 शरणागतवत्सल सारनिधे
 परिपालय मां वृषशैलपते ॥

हे भगवान् ! तुम ब्रह्मा, ईश्वर आदि देवताओं के शिरोमणि हो
तुम शक्तिमान हो । शरणागत लोगों के रक्षक हो । हे प्रभो वृषशैलपति !
मेरी रक्षा करो ।

अतिवेलतया तव दुर्विषहैः
अनुवेलकृतै रपराध शतैः ।
भरितं त्वरितं वृषशैलपते
परया कृपया परिपाहि हरे ॥

हे भगवान् मैं ने अब तक ऐसे कई कसूर किये जो क्षम्य नहीं हैं ।
मैं ने असीम पाप किये हैं । हे वृषशैलपति ! अपनी अनुपम कृपा से
इस अपराधी की रक्षा करो ।

अधिवेकटशैल मुदारमतेः
जनताभिमताधिक दानरतात् ।
परदेवतया गदितास्त्रिगमैः
कमलादयिनाम्नपर कलये ॥

हे वेंकटाचलति ! लक्ष्मीपति ! तुम अपने भक्तों की मनोकामनाएँ
पूरा करनेवाले हो । तुम वेद वेदांगों से श्रेष्ठ कहलाते हो । तुम्हारी
उदार भावना असीम और असमान है । प्रभो मैं तुम्हें छोड़कर अन्य
भगवान् का ध्यान कभी नहीं कर सकता ।

कलवेणुरवा शत गोपवधू
शतकोटि वृतात्स्मरकोटि समात् ।
प्रतिवल्लविकाभिमतात्सुखदात्
वसुदेवसुतान्तरं कलये ॥

हे कृष्ण, तुम्हारी सुंदर मुरली की ध्वनि इतनी मधुर तथा आकर्षित
होती है कि हजारों गोपिकाएँ परवश होकर तुम्हें घेरकर नाच रही हैं ।
प्रभो तुम करोड़ों पद्मियों से सुंदर और प्रभावशाली हो । तुम हर एक
गोपिका का प्रियतम बनकर सुख प्रदान करनेवाले हो । हे श्रीकृष्ण तुम्हें
छोड़कर दूसरे को नहीं चाहता ।

अभिराम गुणाकर दाशरथे
जगदेक धनुर्धर धीरमते ।
रघुनायक राम रमेशविभो
वरदोभव देव दयाजलनिधे ॥

हे श्रीराम ! तुम रमणोय गुणों की निधि हो । जगत के नामी
धनुर्धर हो । हिम्मतवाले हो । हे रघुकुल तिलक राम ! लक्ष्मीपति !
तुम करुणासागर हो । प्रभो, हमारी रक्षा करो । हमें वर दान करो !

अवनीतेनया कमनीयकरं
रजनीकर चारुमुखाबुरुहम् ।
रजनीचर राजतमोमिहरं
महनीय महं रघुराम मये ॥

सीता से स्वीकृत हस्तवाले श्रीराम, तुम्हारा आनन चन्द्रमा से
अत्यंत मनोहर तथा कमल से कोमल है । रावण रूपी राक्षसों का राजा
है, अंधकार के लिए तुम सूर्य जैसे तीक्ष्ण काँतिवाले हो । हे रघुकुल
नंदन मैं तुम्हारा शरण लेता हूँ ।

सुमुखं सुहृदं सुलभं सुखदं
स्वनुजं च सुकायममोघशरम् ।
अपहाय रघूध्वह मन्यमहं
न कथञ्चन कञ्चन जातुभजे ॥

हे राम ! तुम्हारा चेहरा अत्यंत सुंदर और मनोहर ! । तुम्हारा
मने निर्मल तथा निश्चल है । तुम्हारा शरीर कोमल है । तुम्हारे सब
भाई आज्ञापात्र हैं । तुम्हारा बाण अचूक है । हे रघुकुल उद्धारक ! तुम
सब के लिए सुखदायक हो । हे प्रभो श्रीरामचंद्र जी मैं तुम्हें छोड़कर
अन्य देव की पूजा या सेवा कभी नहीं कर सकता ।

बिना वेंकटेशं न नाथो न नाथः

सदा वेंकटेश स्मरामि स्मरामि ।

हरे वेंकटेश प्रसीद प्रसीद

प्रियं वेंकटेश प्रयच्छ प्रयच्छ ॥

श्रीवेंकटेश्वर के बिना मेरा प्रभु या नाथ दूसरा कोई नहीं है । मैं हमेशा श्रीवेंकटेश्वर का स्मरण करूँगा । हे श्रीवेंकटेश्वर मेरी रक्षा करो । दया करके मेरी अभिलाषा पूरा करो । सबल बनाओ । श्रीहरी हमेशा तुम्हें प्रणाम करूँगा ।

अहम् दूरतस्ते पदांबुजयुग्म

प्रणामेच्छयाऽऽगत्य सेवां करोमि ।

सकृत्सेवया नित्य सेवा फलं त्वं

प्रयच्छ प्रयच्छ प्रभो वेंकटेश ॥

हे श्रीवेंकटेश्वर! मेरे मन में बहुत समय से तुम्हारे चरणकमलों को प्रणाम करने की अभिलाषा है । इस इच्छा को पूरा करने के लिए बहुत दूर से कई तकल फें उठाकर आपके पास आया हूँ । मैं जो कुछ सेवा करता हूँ, आप उस से प्रसन्न होकर मुझे ऐसे फूल दो जो तुम्हारी नित्य सेवा के लिए उपयुक्त हो ।

अज्ञानिना मया दोषानशेषान्विहितान् हरे ।

क्षमस्व त्वं क्षमस्व त्वं शेषशैल शिखामणे ॥

हे शेषशैलपति! मैं ने अज्ञान में पड़कर कई पाप किये । कई अपराध किये । आप कृपा करके मेरे पापों को दूर कीजिए । मेरी रक्षा करो । हे प्रभो ।

॥ इति श्रीवेंकटेश्वर स्तोत्रम् ॥

श्रीरस्तु

श्रीवेंकटेश्वर प्रपत्तिः

ईशानां जगतोऽस्य वेंकटपते विष्णोः परां प्रेयसीं
 तद्वक्षस्थल नित्यवासरसिकां तत्क्षांति संवर्धिनीम् ।
 पद्मालंकृत पाणिपल्लवेयुगां पद्मासनस्थां श्रियं
 वात्सल्यादि गुणोज्ज्वलां भगवतीं वन्दे जगन्मातरम् ॥

हे सारे संसार की माता ! सर्वदा विष्णु के वक्षस्तल में रहनेवाली
 माता, तुम श्रीवेंकटाचनपति विष्णु भगवान की प्रिय पत्नी हों । तुम
 उनकी सहिष्णुता की बढानेवाले हो । तुम में वात्सल्य, ममता, सहनेशीलता
 आदि उत्तम गुण विराजमान है । ऐसी पूजनीय लक्ष्मीको मैं वंदन करता हूँ।

श्रीमन् कृपाजलनिधे कृत सर्वलोक
 सर्वज्ञ शक्ततत्त्वत्सल सर्वशेषिन् ।
 स्वामिन् सुशील सुलभाश्रित पारिजात
 श्रीवेंकटेश चरणौ शरणं प्रपद्ये ॥

हे श्रीवेंकटेश्वर ! तुम दयासागर हो, जगन्नायक हों, सर्वज्ञ हो,
 सर्वशक्तिमान हो । तुम सर्व लोकों याने जडचेतनामय सारे संसार के
 लिए आधारभूत हो । श्रितजन रक्षक हो । हे प्रभो तुम्हारे पादपद्मोंकी
 शरण लेता हूँ ।

आनूपुरोचित सुजात सुगन्धि पुष्प
 सौरभ्य सौरभकरी समसन्निवेशौ ।
 सौम्यौ सदाऽनुभवनेऽपि नवानुभाव्यौ
 श्रीवेंकटेश चरणौ शरणं प्रपद्ये ॥

हे श्रीवेंकटेश्वर प्रभो ! नूपुरों तक अर्पित श्रेष्ठपुष्पों के सुगंध को
 सुगंधि देनेवाले फूलों से अलंकृत होकर सर्वदा सेवित हो । हमेशा नये ढंग
 से पूजित हो । ऐसे श्रीवेंकटेश्वर प्रभु के कमल चरणोंकी शरण लेता हूँ ।

मद्योविकसि समुदित्वर सांद्रराग
 सौरभ्यनिर्भर सरोरुह साम्यवार्ताम् ।
 सम्यक्षु माहस पदेषु विलेखयन्ती
 श्रीवेंकटेश चरणों शरणं प्रपद्ये ॥

श्रीवेंकटेश्वर के चरण इतने पवित्र तथा सुकोमल हैं कि विक्रमि-
 तुगंधित लालिम युक्त पद्मों से उनका तुलना करना टेढ़ी कोर है । उन के
 चरण पद्मों से भी श्रेष्ठ हैं । ऐसे अनुपम चरणों की मैं शरण लेता हूँ ।

रेखामयध्वज सुधाकलशातपत्र
 वज्रांकुशांबुरुह कल्पकशंखचक्रैः ।
 भव्यैरलंकृत तली परतत्त्व चित्तैः
 श्रीवेंकटेश चरणौ शरणं प्रपद्ये ॥

श्रीवेंकटेश्वर के चरण, ध्वज, छत्र, वज्र, कमल, कल्पवृक्ष, शंख, चक्र
 इत्यादि दिव्य चित्तों से सुरभित हैं । ऐसे सुसज्जित युगल चरणों की मैं
 तहे दिल से शरण लेता हूँ ।

ताम्रोदरद्युतिपराजित पद्मरागी
 बाह्यमहोभिरभिभूत महेन्द्रनीली ।
 उद्यन्नखांगुभिरुदस्त शशांकभामौ
 श्रीवेंकटेश चरणौ शरणं प्रपद्ये ॥

श्रीवेंकटेश्वर के चरणों के तले इतने लाल रंग है कि पद्मराग भी
 लज्जित है । उनके ऊपरी तेज से नीलमणियाँ भी प्रकाश विहीन होती हैं
 प्रभू की नखों की कांति इतनी तेज है कि चंद्रकांति भी फीकी पड़ जाती
 है । ऐसे तेजवान चरणों की मैं शरण लेता हूँ ।

सप्रेमभीति कमलाकर पल्लवाभ्यां
 संवाहनेऽपि सपदिन्नलममादधानौ ।
 कान्ताव वाङ्मनसगोचर सीकुमार्यौ
 श्रीवेंकटेश चरणौ शरणं प्रपद्ये ॥

लक्ष्मीदेवी प्रतिदिन अपने कोमल हस्तों से प्रेमपूर्वक श्रीवेंकटेश्वर स्वामी के चरण दवाती है । फिर भी वे जल्दी थक जाती हैं । उन की सुकुमारता बहुत नाजुक है । उसकी कल्पना हम नहीं कर सकते । ऐसे सुंदर तथा सुकोमल चरणों की शरण लेता हूँ ।

लक्ष्मी महीतदनुरूप निजानुभाव
नीलादि दिव्य महिषी करपल्लवानां ।
आरुण्य संक्रमणतः किल सांद्ररागौ
श्रीवेंकटेश चरणौ शरणं प्रपद्ये ॥

श्रीवेंकटेश्वर प्रभु के तीन रानियाँ हैं, श्रीदेवी, भूदेवी तथा नीला देवी । ये तीनों अनुपम दिव्य महिमावाली हैं । ये अपने कोमल करपल्लवों से श्रीस्वामी की सेवा करती हैं जिस से श्रीवेंकटेश्वरस्वामी के चरणों की लालिमा घनीभूत हो गयी है । मैं ऐसे चरणों की शरण लेता हूँ ।

नित्यानमद्विधि शिवादि किरीटकोटि
प्रत्युप्तदीप्त नवरत्न मह प्ररोहैः ।
नीराजनाविधि मुदारमुपादधानौ
श्रीवेंकटेश चरणौ शरणं प्रपद्ये ॥

ब्रह्मा, महेश्वर आदि देवता लोग अपने रत्न खजित किरीट पहनकर श्रीवेंकटेश्वर के कमल चरणों के प्रणाम करते हैं । मुकुटों को रत्न कांति से प्रभु चरण आरति पाते हैं । ऐसे चरणों की शरण लेता हूँ ।

“विष्णोः पदे परम्” इत्युदित प्रशंशौ
“यौ मध्व उत्स” भोग्यतयाऽऽप्युपात्तौ ।
भूयस्तथेति तव पाणितल प्रदिष्टौ
श्रीवेंकटेश चरणौ शरणं प्रपद्ये ॥

हे श्रीवेंकटेश्वर तुम्हारे चरणों का वर्णन वेदों में भी किया गया जो अत्यंत उत्कृष्ट तथा प्रशंसनीय है। तुम्हारे चरण सर्व श्रेष्ठ एवं मधुर धारा कहे गये हैं और आने हस्तों से दिखाये जाते हैं। ऐसे पवित्र तुम्हारे चरणों की मैं शरण लेता हूँ।

पार्थाय तत्सदृश सारथिना त्वयैव
यो दर्शितौ स्वचरणी शरणं व्रजेति ।
भूयोऽपि मह्यमहिता करदर्शितौ ते
श्रीवेंकटेश चरणी शरणं प्रपद्ये ॥

हे श्रीवेंकटेश्वर ! अर्जुन के योग्य सारथी से आप के चरणों से शरण लेने को आप से कहा गया है। इस वेंकटाचल पर आप के चरणों से शरण लेने के लिए मुझे हाथ से आने चरण दिखाये जाते हैं। ऐसे चरणों की मैं शरण लेता हूँ।

मन्मूर्धनि कालिय फणे विकटावत्रीषु
श्रीवेंकटाद्रि शिखरे शिरसि श्रुतीनां ।
चित्तेऽप्यनन्य मनसां सममाहिता ते
श्रीवेंकटेश चरणी शरणं प्रपद्ये ॥

हे श्रीवेंकटेश्वर प्रभो ! तुम्हारे पवित्र चरण मेरे सिर पर, कालिय नामक सर्प पर, भयंकर कानने में, श्रीवेंकटाद्रि के शिखर पर, उनिपट्टों में इतना ही नहीं सब भक्तों के मन में सावधान से एक रूपा से रखे गये हैं ऐसे तुम्हारे महान चरणों की शरण लेता हूँ।

आम्लानहृष्य दवनीतल कीर्णपुष्पा
श्रीवेंकटाद्रि शिखराभरणायमानौ ।
आनंदिताखिल मनोनयनौ तवैतौ
श्रीवेंकटेश चरणी शरणं प्रपद्ये ॥

हे स्वामी ! तुम्हारे निर्मल चरणों पर सारे संसारके फूल जो भूमि पर गिरे तथा बिखरे हुए हैं, विकसित होते हैं, प्रभू तुम्हारे चरण वेंकटाचल के शिखर के लिए अलंकार तथा शोभायमान हैं । तुम्हारे चरण सब मानवों के मन और आँखोंको आनन्द तथा शोभा देनेवाले हैं । ऐसे चरणों की मैं शरण लेता हूँ ।

प्रायः प्रपन्नजनता प्रथमावगाह्यौ
मातुः स्तनाविव शिशो रमृतायमानौ ।
प्राप्तौ परस्पर तुलामतुरांतरौ ते
श्रीवेंकटेश चरणौ शरणं प्रपद्ये ॥

हे वेंकटेश्वर ! तुम्हारे शरण में आये हुए भक्तलोग प्रप्रथम आप के पवित्र चरण देखते हैं और इतने आनंद पाते हैं कि शिशुको अपनी माताके स्नानसे अमृततुल्य दूध प्राप्त हुआ हो । तुम्हारे चरणोंको तुलना अन्य वस्तुओं से नहीं की जा सकती । ऐसे दर्शनीय तुम्हारे चरणोंकी मैं शरण लेता हूँ ।

सत्वोत्तरै रसतत सेव्य पदांबुजेन
संसारतारक दयार्द्रं दृगंचलेन ।
सौम्योपयंतु मुनिना ममदर्शितौ ते
श्री वेंकटेश चरणौ शरणं प्रपद्ये ॥

हे वेंकटेश्वर ! तुम्हारे कमल चरण योगिपुंगवों से सेवित हैं । इस भवसागरको पार करने के लिए श्री मणवाल महामुनि ने आपके चरणों को दिखाया है । ऐसे पवित्र तथा शक्तिमान चरणोंको मैं शरण लेता हूँ ।

श्रीश श्रिया घटिकया त्वदुपायभावे
प्राप्ये त्वयि, स्वयमुपेय, तथा स्फुरन्त्य ।
नित्याश्रिताय निरवद्यगुणाय तुभ्यं
स्यां किङ्करो वृषगिरीश न जातु मह्यम् ॥

हे लक्ष्मीपति ! तुम समस्त भक्तजनोंको मोक्ष देनेवाले हो । तुम साधन सहाय हो । सबको स्वयं प्राप्य हो । लक्ष्मीदेवी से तुम आश्रित हो । तुम में असमान तथा अनुपम गुण मौजूद हैं । हे वृषाचलपति ! तुम्हारी सेवा करता हूँ ।

॥ इति श्रीवेंकटेश्वर प्रपत्तिः ॥

श्रीवेंकटेश्वर मंगलाशासनम्

श्रियः कान्ताय कल्याण निधये निधयेऽर्थिनां ।

श्रीवेंकट निवासाय श्रीनिवासाय मंगलम् ॥

हे लक्ष्मीपति! तुम में सर्व मंगल तथा सर्व शुभ मूर्तिमान हैं । तुम सब को वरदाता हो । हे वेंकटाचल पर निवास करनेवाले श्रीनिवासा, तुम्हारा मंगल हो ।

लक्ष्मी सविभ्रमालोक सुभ्रोविभ्रम चक्षुषे ।

चक्षुषे सर्व लोकानां वेंकटेशाय मंगलम् ॥

हे वेंकटाचलपति तुम्हारी आँखें तथा भौहें बहुत सुंदर और अत्यंत मनोहर हैं । ऐसे सुंदर नयन श्रीलक्ष्मी को अचरज में निरंतर देखते हैं । ये नयन आप के लिए ही नहीं बल्कि सर्व लोकों का नेत्र-सा है । ऐसे नेत्रवाले श्रीवेंकटेश्वर का मंगल हो ।

श्रीवेंकटाद्रि श्रृंगाग्र मंगलाभरणाग्रये ।

मंगलानां निवासाय वेंकटेशाय मंगलम् ॥

हे श्रीनिवास ! तुम्हारे मंगल चरण वेंकटाद्रि पर्वत की शिखर के लिए मंगलदायक एवं अलंकार हैं । तुम्हारे चरण सर्व शुभों का मूलाधार हैं । ऐसे श्रीनिवास का मंगल हो ।

सर्वावयव सौंदर्य संपदा सर्व चेतसां ।

सदा सम्मोहनायस्तु वेंकटेशाय मंगलम् ॥

हे श्रीवेंकटेश्वर ! तुम्हारे सब अवयव सौंदर्य संपदा से शोभायमान हैं जिन्हें देखकर समस्त मानवजाति सम्मोहित हो जाती है अर्थात् तुम्हारे सर्व अंग अपने रूप सौंदर्य से सब मानवों को मोहित करते हैं । ऐसे श्रीवेंकटेश्वर का मंगल हो ।

नित्याय निरवद्याय सत्यानंद चिदात्मने ।

सर्वांतरात्मने श्रीमद्वेङ्कटेशाय मंगलम् ॥

हे शेषाचलपति ! कभी तुम्हारे नाश नहीं है । तुम अविनाश हो । तुम में ईर्ष्या द्वेष नहीं हैं । तुम सच्चिदानन्द हो । तुम समस्त प्राणों का आत्म स्वरूप हो । हे श्रीवेङ्कटेश्वर तुम्हारा मंगल हो ।

स्वतस्सर्वविदे सर्व शक्तये सर्व शेषिणे ।

सुलभाय सुशीलाय वेङ्कटेशाय मंगलम् ॥

हे प्रभू ! तुम स्वभाव से समस्त विषय जानते हो । तुम शक्तिमान हो । संपन्न हो । तुम सरल हो । शीलवान हो । प्रमुख हो । ऐसे श्रीनिवास का मंगल हो ।

परस्मै ब्रह्मणे पूर्णकामाय परमात्मने ।

प्रयुजे परतत्त्वाय वेङ्कटेशाय मंगलम् ॥

हे लक्ष्मीपति ! तुम परब्रह्म स्वरूपवाले हो । तुम सब के मनोरथों को पूरा करनेवाले हो । तुम परमात्मा हो । परतत्त्वमूर्ति हो । ऐसे वेङ्कटपति का मंगल हो ।

अकालतत्त्व मश्नांतमात्मना मनुपश्यतां ।

अतृप्त्यमृतरूपाय वेङ्कटेशाय मंगलम् ॥

हे भगवान ! तुम्हारा कल्याणमय स्वरूप निरंतर तुम्हारे दर्शन करने वाले लोगों के लिए अमृत स्वरूप है । तुम्हारा दिव्यस्वरूप लगातार देखने पर भी तृप्ति नहीं होती । ऐसे स्वामी का मंगल हो ।

प्रायः स्वचरणी पुंसां शरण्यत्येव पाणिना ।

कृपयाऽऽदिशते श्रीमद्वेङ्कटेशाय मंगलम् ॥

हे श्रीवेङ्कटेश्वरस्वामी ! तुम समस्त मानवों के लिए शरण्य हो । तुम्हारे पादयुग्म सब के लिए कृपापूर्वक हो । तुम्हारे हस्त सब के लिए चरदहस्त हो । हे प्रभो तुम्हारा मंगल हो ।

दयाऽमृत तरंगिण्या स्तरंगैरिव शीतलैः ।

अपांगैस्सिञ्चते विश्वं वेंकटेशाय मंगलम् ॥

हे लक्ष्मीपति ! तुम्हारी दयारूप प्रवाह अमृतधारा के समान निरंतर बहती है । उस प्रवाह की लहरें ठंडे कटाक्ष से सारे संसार को सींचती हैं जिस से सारा संसार शुभप्रद होता है । ऐसे प्रभू का मंगल हो ।

सम्भूषांबर हेतीनां सुषमावह मूर्तये ।

सर्वार्ति शमनायास्तु वेंकटेशाय मंगलम् ॥

हे श्रीनिवासा ! तुम्हारी दिव्यमूर्ति पुष्पहार, रत्नाभरण, पीतांबर, आयुध इत्यादि का धारण करके सबको शोभा देनेवाली है । तुम्हारी दिव्य मूर्ति सबकी बाधाएँ दूर करती है । हे श्रीवेंकटेश्वर तुम्हारा मंगल हो ।

श्रीवैकुण्ठ विरक्ताय स्वामि पुष्करिणी तटे ।

रमया रममाणाय वेंकटेशाय मंगलम् ॥

श्रीवैकुण्ठ से विमुख होकर स्वामि पुष्करिणी तट पर लक्ष्मी के साथ निवास करनेवाले हे लक्ष्मीपति; तुम्हारा मंगल हो ।

श्रीमत्सुंदर जामातु मुनिमानस वासिने ।

सर्वलोके निवासाय श्रीनिवासाय मंगलम् ॥

हे वेंकटाचलपति ! तुम मण्वाल महामुनि के मन में निवास करते हो । तुम सर्वलोक निवासी हो । तुम्हारा मंगल हो ।

मंगलाशासन परैर्मदाचार्य पुरोगमैः ।

सर्वैश्च पूर्वैराचार्यैः सत्कृतायास्तु मंगलम् ॥

हे प्रभो ! तुम मंगलाशासन करनेवाले मेरे अचार्यों के पूर्वजों से तथा उनके पूर्वी आचार्यों से सत्कार पा चुके हो । हे स्वामी तुम्हारा मंगल हो ।

॥ इति श्रीवेंकटेश्वर मंगलाशासनम् ॥

श्रीवेंकटेश्वर मंचतुर्दशजरिका स्तोत्रम्

श्रीशेषशैल सुनिकेत दिव्यमूर्ते
 नारायणाच्युत हरे नलिनायताक्ष ।
 लीला कटाक्ष परिरक्षित सर्वलोक
 श्रीवेंकटेश मम देहि करावलंबम् ॥
 ब्रह्मादिवंदित पदांबुज शंखपाणे
 श्रीमत्सुदर्शन सुशोभित दिव्य हस्त ।
 कारुण्यसागर शरण्य सुपुण्यमूर्ते
 श्रीवेंकटेश मम देहि करावलंबम् ॥
 वेदांनवेद्य भवसागर कर्णधार
 श्रीपद्मनाभ कमलाक्षित पादपद्म ।
 लोकैकपावन परात्पर पापहारिन्
 श्रीवेंकटेश मम देहि करावलंबम् ॥
 लक्ष्मीपते निगमलक्ष्य निजस्वरूप
 कामादिदोष परिहारित बोधदायिन् ।
 दैत्यारिमर्दन जनार्दन ब्राह्मदेव
 श्रीवेंकटेश मम देहि करावलंबम् ॥
 तापत्रयं हरिविभो रभसं मुरारे
 संरक्ष मां करुणया सरसीरुहाक्ष ।
 मच्चिष्यमप्यनुदिनं परिरक्ष विभो
 श्रीवेंकटेश मम देहि करावलंबम् ॥
 श्रीजातरूप नवरत्न लसत्किरीट
 कस्तूरिकातिलक शोभितललाटदेश ।
 राकेन्दुबिम्ब वदनांबुज वारिजाक्ष
 श्रीवेंकटेश मम देहि करावलंबम् ॥

वंदारुलोक वरदाने वचोविलास
 रत्नाकराढ्यहार परिशोभित कंबुकंठ ॥
 केयूर रत्न सुविभासी दिगंतराल
 श्रीवेंकटेश मम देहि करावलंबम् ॥
 दिव्यांगदांछिन भुजद्वय मंगलात्मन्
 केयूरभूषण सुशोभित दीर्घबाहो ।
 नागेंद्र कंकण करद्वय कामदायिन्
 श्रीवेंकटेश मम देहि करावलंबम् ॥
 स्वामिन् मद्भाजननवाग्धि मध्यमर्ग
 मामुद्धराद्य कृपया करुणापयोनिधे ।
 लक्ष्मि च देहि विपुलामृणवारणाय
 श्रीवेंकटेश मम देहि करावलंबम् ॥
 दिव्यांगराग परिचरित कोमलांग
 पीतांबरवृत तनो तरुणार्क भास ।
 सत्कांचनाभ परिधान सु पट्टबंध
 श्रीवेंकटेश मम देहि करावलंबम् ॥
 रत्नाढ्यधाम सुनिबद्ध कटिप्रदेश
 माणिक्य दर्पण सुसज्जिभ जानुदेश ॥
 जंघाद्वयेन परिमोहित सर्वलाक
 श्रीवेंकटेश मम देहि करावलंबम् ॥
 लोकैकपावन सरित्परिशोभितांघ्रे
 त्वत्पाद दर्शनेदिनेश महाप्रसादात् ॥
 हार्दत मश्चसकलं लयमापभूमन्
 श्रीवेंकटेश मम देहि करावलंबम् ॥
 कामादिवैरि निवहोपि यमं प्रयातः
 दारिद्र्यमत्यवगतं सकलं दयालो ॥

दीनं च मां स मवलोक्य पयांग्रिन् दृष्ट्या
श्रीवेंकटेश म म देहि केरावलंबम् ॥

श्रीवेंकटेश पदपंकज षट्पदेन
श्रीमन् नृसिंहयतिनो रचितं जगत्यां ।
एतत्पठन्ति मनुजाः पुष्पोत्तमस्य
ते प्राप्तवन्ते परमां पदवीं मुरारे ॥

श्रीनिवासावतार के देश-काल का निर्णय

आदौ कृतयुगे जम्बूद्वीपे भरतवर्षके ।
गङ्गाय दक्षिणे भागे योजनना शतद्वये ॥
पञ्चथोजनमात्रेषु पूर्वाबोधेस्तु पश्चिमे ।
मासे भाद्रपदे विष्णुतिथौ विष्णुसमन्विते ॥
सिद्धयोगे सोमवारे गिरौ नारायणाह्वये ।
स्वामिपुष्करिणी तीरे पश्चिमे भूत्य पश्चिमे ॥
वृन्दारकाणां वृन्दैस्तु प्रार्थितो लोकरक्षकः ।
आविर्भूत भगवान् श्रीनिवासः परः पुमान् ।
श्रीनिवासाय महसे निष्कला निष्कलात्मने ।
नमोऽस्तु पद्मनेत्राय पवित्रयादिवेदसे ॥

श्रीमत्सप्तर्षी कृत

श्रीवेंकटेश्वर शरणागति स्तोत्रम्

शेषाचलं समाराध्य कश्यपाद्या महर्षयः ।
 वेंकटेशं रमानाथं शरणं प्रापुरंजसा ॥
 कलिसंतारकं मुख्यं स्तोत्रमेज्जपेन्नरः ।
 सप्तर्षि वाक्प्रसादेन विष्णुस्तस्मै प्रसीदति ॥

कश्यप उवाच

कादिह्रीमंत विद्यायाः प्रार्थ्यैव परदेवता ।
 कलौ श्रीवेंकटेशाख्यां तामहं शरणं भजे ॥

अत्रि उवाच

अकारादि क्षकारांति वर्णं यः प्रतिपाद्यते ।
 कलौ स वेंकटेशाख्यः शरणं मे रमायतिः ॥

भरद्वाज उवाच

भगवान् भार्गवीकांतो भक्ताभीप्सितदायकः ।
 भक्तस्य वेंकटेशाख्यो भरद्वाजस्य मे गतिः ॥

विश्वामित्र उवाच

विराड्विष्णुविधाता च विश्वं विज्ञानं विग्रहः ।
 विश्वामित्रस्य शरणं वेंकटेशो विभुस्तदा ॥

गौतम उवाच

गौगौरीश श्रियोन्नित्यं गोविंदो गोपति विभुः ।
 शरणं गौतमस्त्यास्तु वेंकटाद्रि शिरोमणि ॥

जमदग्नि रुवाच

जगत्कर्ता जगद्भूता जगद्धर्ता जगन्मयः ।

जमदग्नेः प्रपन्नस्य जीवेशो वेंकटेश्वरः ॥

वसिष्ठ उवाच

वस्तुविज्ञानगात्रं यन्निविशेयं सुखं च सत् ।

सद्ब्रह्मैवाहमस्मिति वेंकटेशं भजे सदा ॥

फलश्रुति

सप्तर्षि रचितं स्तोत्रं सर्वदा यः पठेन्नरः ।

सोऽभयं प्राप्नुयात्सत्यं सर्वत्र विजयी भवेत् ॥

श्रीवेंकटेश्वर (श्रीमार्कण्डेय कृत) वज्रकवचस्तोत्रम्

नारायणं परब्रह्म सर्वकारण कारणम् ।

प्रपद्ये वेंकटेशाख्यं तदेकवचं मम ॥

सहस्रशीर्षा पुरुषो वेंकटेशः शिरोवतु ।

प्राणेशः प्राणनिलयः प्राणं रक्षतु मे हरिः ॥

आकाशराट् सुरानाथ आत्मानं मे सदावतु ।

देवदेवोत्तम पायाहेहं मे वेंकटेश्वरः ॥

सर्वत्र सर्वकालेषु मंगांबाजा निरीश्वरः ।

पालयेन्मामकं कर्मसाफल्यं नः प्रयच्छतु ॥

फलश्रुति

यः एतद्वज्रकवचं मभेद्यं वेंकटेशितुः ।

सायंप्रातः पठेन्नित्यं मृत्युर्निरति निर्भयः ॥

शुकमुनि कृत 'नटनादिकम्'

पतंगतक्रमभ्रमोभ्रमन्मतंगजभ्रमस्सुधाभिजाष देव भूरमंदविक्रमः ।

निवातदीप निश्चलश्चलत्करार वस्पुटद्दिगंतराल मण्डलोननर्तनन्दयन्विभूम् ॥

परिभ्रमन्नदक्षिणं प्रदक्षिणं परिभ्रमान्विभवयन् विलोकयन्नभावकेन नोकयन्
शनैश्शनैरसञ्चरन् त्सुसञ्चरन् शनैश्शनैर्मृदाविलावलोकनोमदाविलावलोकनः ।

ततस्तु तोटकं वृत्तं करताडनेपूर्वकम् ।

रेचयन्दण्डमाडाय कराभावनलम्बयन् ॥

आस्फोटयन् क्ष्वेलयन् श्रुत्वा स्वपदस्पर्शितं मस्तकः ।

ननर्तं परमानन्दो वाचयन्नामशार्ङ्गिणः ॥

चरञ्चटुलं कलयन् कमलारसिकं सरसं रमयन् ।

नटनं घटस्सुपदन् सुगदन् हरिनाम मुनिश्शुभदायि शुकः ॥

अरुणारूपपङ्कज सोदर दृक्कारुणापरिणाभि कटाक्षचण ।

रेथनेमि लसत्करनीरुहं रमयन्नतसी कुसुमांगरुचिम् ॥

सरस् विचिरस्क्रुरतः परितो विनसन्नसकृन्मुखैरि विभोः ।

करपङ्कज ताडनताल लसद्गमनं निगमान्तं विलासभुवः ॥

भुजवद्ध जटः करयुग्म धृताञ्जलिको मृगयूते सदृप्तवेपुः ।

मृगयन्निव यूधपतिं परितः पुनरप्य सकृद्विकृतस्सुकृतः ॥

अतीकुण्डतांग भुजंग नमो नटनस्फुट कुट्टित कुट्टिमभूः ।

रजनीमुखताण्डवकुण्डलित त्रिपुरान्तकरीति पुरश्चरणः ॥

इति दृढकृतभक्तिः वासुदेवे परस्मिन् सकल सुफल मिश्रश्रेयसी श्रीनिवासे ।
 विगन कलिकायोऽपायशून्यात् भूतिविमलधिभूषणभूतः सयमी व्यासमूनुः ॥
 हृदयकमल मध्याध्यासित पङ्कजाक्षं पञ्चजन परिवर्ही भूषणस्त्रादिसेव्यम् ।
 बहिरिव पुरतस्त वीक्ष्य चक्षुः दस्थ नियमित निगमन्तः पूर्णकामो बभूव ॥

श्री कृष्णाष्टकम्

वासुदेवसुतं देव कंसचाणूर मर्दनं ।
 देवकी परमानन्द कृष्ण वन्दे जगद्गुरुम् ॥
 अतसीपुष्पसकाशं हरनूपुरशोभितम् ।
 रत्नककणकेयूरं कृष्णं वन्दे जगद्गुरुम् ॥
 मन्दारगन्ध संयुक्तं चारुहासं चतुर्भुजं ।
 बहिरपिच्छाचूडांगं कृष्णं वन्दे जगद्गुरुम् ॥
 उत्फुल्ल पद्मपत्राक्षं नीलजीमून् सन्निभं ।
 यादवानां शिरोरत्नं कृष्णं वन्दे जगद्गुरुम् ॥
 रुक्मिणी केलिसंयुक्तं पीतांबर सुशोभितं ।
 आवाप्त तुलसीगन्धं कृष्णं वन्दे जगद्गुरुम् ॥
 गोपिकानां कुचद्वन्द कुंकुमांकित वक्षसं ।
 श्रीनिकेतं महेष्वासं कृष्णं वन्दे जगद्गुरुम् ।
 श्रीवत्साङ्गं महोरस्कं वनमालविराजितं ।
 शङ्खचक्रधरं देवं कृष्णं वन्दे जगद्गुरुम् ॥
 कृष्णाष्टकमिदं पुण्यं प्रातरुत्थाय यः पठेत् ।
 कोटिजन्मकृतं पापं स्मरणेन विनश्यति ॥

श्रीवेंकटेश्वर द्वादशमंजरिका स्तोत्रम्

श्रीकल्याण गुणोल्लासं चिद्विलासं महोरसम् ।
शेषद्रि मस्तकावासं श्रीनिवासं भजामहे ॥

वराह वेषं भूलोलं लक्ष्मीमोहन विग्रहं ।
वेदांत गोचरं देवं वेंकटेशं भजामहे ॥

सांगानगार्चुदाकारं प्रसन्न मुखपङ्कजं ।
त्रिश्वं विश्वभराधीशं वृषाद्रीशं भजामहे ॥

कनत्कनकचेसाढ्यं करुणावरुणालयम् ।
श्रीवासुदेवं चिन्मूर्ति शेषाद्रीशं भजामहे ॥

घनाघनांगं शेषाद्रि शिखरानन्दं मन्दिरम् ।
श्रितचातक संरक्षं सिंहाद्रीशं भजामहे ॥

मंगाकलत्रं पद्माक्षं कस्तूरितिलकोज्ज्वलम् ।
तुलस्यादिक संपूज्यताक्ष्यागि विभुमाश्रये ॥

स्वामिपुष्करिणी तीर्थवासं व्यासाभिर्वाणितम् ।
स्वांग्रिसूचिक हस्ताब्ज सत्स्वरूपं भजामहे ॥

श्रीमन्नारायणं श्रीशं ब्रह्मांड वनतत्परम् ।
ब्रह्मण्यं सच्चिदानन्दं भावातीतं भजामहे ॥

अंजनाद्रीश्वरं लोकरंजनं निरंजनम् ।
भक्तारिभंजनं भक्त वज्रपंजरमाश्रये ॥

भिल्लीमनोहरं सत्त्वमानसं जगतां प्रभुं ।
 नारायणाचलपतिं नतावाविर्पविश्रये ॥
 चतुर्मुखं त्र्यम्बकेड्यं सन्नृतार्थं कदम्बकम् ।
 बकप्रमुखविज्ञासं प्रधानं पुरुषंश्रये ॥
 श्रीमत्पद्मासनाग्रस्थं चित्तितीर्थं प्रदायकम् ।
 लोकैकनायकं श्रीमद्वेङ्कटाद्रिसमाश्रये ॥
 वेङ्कटाद्रिं हरे स्तोत्रं द्वादशश्लोकं संयुतम् ।
 यः पठेत्सततं भक्त्या तस्य मुक्तिः करोत्यस्यता ॥
 सर्वपापनिप्रवेहुः कटस्तदाह उच्यते ।
 तन्नामको वेङ्कटाद्रिः तदीशो वेङ्कटेश्वरः ॥
 तस्य संस्मरणा देव मोक्षसाम्राज्यं माप्नुयात् ।
 वेङ्कटेश पदद्वन्द्वं व्रजामि शरणं सदा ।
 भूयाच्चरण्यो मे साक्षात्सदेवो भक्तवत्सलः ॥



प्रह्लाद कृत
श्रोह्यष्टकम्

हरिर्हरति पापानि दुष्टचित्तरपि स्मृतः ।
 अनिच्छायापि संस्पृष्टां दहत्येव पावकः ॥
 म गंगा स गया सेतु स्सकाशी स चतुष्करं ।
 जिह्वाग्रे वर्तते यस्य हरिरित्यक्षरद्वयम् ॥
 वारणास्तां कुरुक्षेत्रे नैमिशारण्य एव च ।
 यत्कृतं तेन यत्प्रोक्तं हरिरित्यक्षरद्वयम् ॥
 पृथिव्यां यानितोर्थानि पुण्यायायनानि च ।
 तानि सर्वाण्यशेषाणि हरिरित्यक्षरद्वयम् ॥
 गवां कोटिमहस्राणि हेमकन्या सहस्रकं ।
 दत्तं स्तात्तेनयोक्तं हरिरित्यक्षरद्वयम् ॥
 ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदस्सामवेदोऽप्यथर्वणः ।
 अधीतस्तोनयानोक्तं हरिरित्यक्षरद्वयम् ॥
 अश्वमेधैर्महायज्ञैर्नरमेधैस्तथैव च ।
 इष्टं स्यात्तेनयोक्तं हरिरित्यक्षरद्वयम् ॥
 प्राणप्रयाणरातेयं संसारव्याधिनाशनम् ।
 दुःखात्यंतं परिव्राणं हरिरित्यक्षरद्वयम् ॥
 बद्धः परिकरस्तेन मोक्षाय गमनं प्रति ।
 सकृदृच्चारितं येन हरिरित्यक्षरद्वयम् ॥
 हर्यष्टकं मिदं पुण्यं प्रातस्तथाय यः पठेत् ।
 आयुष्यं फलमारोग्यं यशंवृद्धिश्चियावहम् ॥

श्री गोविन्दाष्टकम्

सत्यज्ञानमनन्तं नित्यमनाकाशं परमाकाशं
गोष्ठप्रांगणखिलाल मनायासं परमायासं ।
माया कल्पित नानाकारं मनाकारं भूवनाकारं
क्षमानाथमनाथं प्रणमत गोविन्दं परमानन्दम् ॥

मृत्स्नामत्सीहेमि यशोदा ताडन शैशवं संव्रामं
व्यादित वक्त्रालोकिने लोकलोक चतुर्दशलोकानि ।
लोकत्रयप्रमूलस्तंभं लोकलोक मनालोकं
लोकेशं परमेशं प्रणमत गोविन्दं परमानन्दम् ॥

त्रैविष्टप रिपुवीरघ्नं क्षिनिभारघ्नं भवरोघ्नं
कैवल्यं नवनीतहार मनाहारं भूवनाकारं ।
वैमल्यस्फुट चेतोवृत्ति विशेषभास मनाभासं
शैवं केवलजातं प्रणमत गोविन्दं परमानन्दम् ॥

गोपालं भूलीलाविग्रह गोपालं कुलगोपालं
गोपीखेलने गोवर्धन धृतिलालाविलासित गोपालं ।
गोभिनिगदित गोविन्दस्फुट नामानं बहुमानं
गोपीगौचरमाश्रिकं प्रणमत गोविन्दं परमानन्दम् ॥

गोपीमण्डल गोष्ठीभेदं भेदानन्दमभेदाभं
शब्दगोपुर निर्धूतोत्कृत धूलिधूसर सोभाग्यं ।
श्रद्धाभक्ति गृहीतानन्दमचिन्त्यं चितित सद्भावं
चितामणि महिमानं प्रणमत गोविन्दं परमानन्दम् ॥

स्नानव्याकुल योषिद्वस्त्रमुपादायागमुपारूढं
 व्यादित्संतोरथ दिग्बस्त्रा उपादातीरपकर्षन्तम् ।
 निर्धूतद्वयशोकविमोहं बुद्धं बुद्धेरतस्तं
 सत्तामात्रशरीरं प्रणमत गोविन्दं परमानन्दम् ॥

कांतंकारण कारणमादिमनादि कालमनाभासं
 कार्लिदीगत कालिय शिरस्सु मुहुर्मुत्यन्तं सुहमन्तं ।
 कालंकाल कालातीतं कलिताशेषं कलिदोषघ्नम्
 कालत्रयहेतुं प्रणमत गोविन्दं परमानन्दम् ॥

वृन्दारवनभुवि वृन्दारकारण वृन्दाराराधित वन्द्योहं
 कुन्दाभामल मन्दस्मेर सुश्रानन्दं सुहृदानन्दं ।
 वन्द्याशेष महामुनिमानेस वन्द्यानन्दं पदद्वन्द्वं
 द्याशेषगुणान्ध्रि प्रणमत गोविन्दं परमानन्दम् ॥

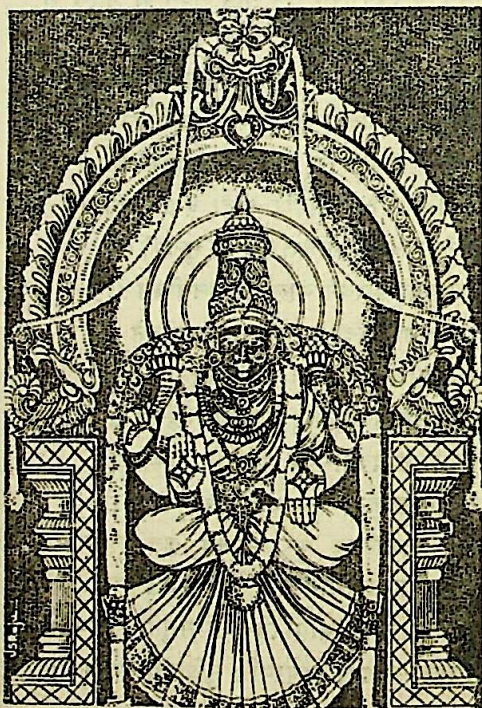
गोविंदाष्टाकमेतधीते गोविंदापित चेतयः
 गोविंदाच्युत माधव विष्णो गोकुलनायक कृष्णेति ।
 गोविंदांघ्रि सरोज ध्यान सुधाजल धौत समस्ताघं
 गोविंदं परमानन्दामृतस्थं स तमभ्येति ॥



देवकृत लक्ष्मी स्तोत्रम्

धमस्व भगवत्थं व क्षमाशील परात्परे ।
 शुद्धसत्त्वस्वरूपे च कोमादि परिवर्जिते ॥
 उपमे सत्त्वसाध्वीनां देवीनां देवपूजिते ।
 त्वया विना जगत्सर्वं मृततुल्यं च निष्फलम् ॥
 सर्वसंपत्स्वरूपा त्वं संतुष्टा सर्वरूपिणी ।
 रामेश्वर्यं धिः त्वं त्वत्कलास्सर्वं योषित ॥
 कैलासे पार्वती त्वं च क्षीरोदे सिधुकन्यका ।
 स्वर्गे च स्वर्गलक्ष्मीस्त्वं मर्त्यं लक्ष्मीश्च भूतले ॥
 वैकुण्ठे च महालक्ष्मी देवदेवी सरस्वती ।
 गंगा च तुलसी त्वं सावित्री ब्रह्मलोकगा ॥
 कृष्णप्राणाधिदेवी त्वं गोलोके राधिका स्वयम् ।
 राजे राजेश्वरी त्वं च बृन्दा बृन्दावने वने ॥
 कृष्णप्रिया त्वं भांडीरे चन्द्रा चन्द्रकानने ।
 विरजा चंपकवने शतशृंगे च सुन्दरी ॥
 पद्मावती पद्मवने मालती मालतीवने ।
 कुन्ददन्ता कुन्दवने सुशीला केतकीवने ॥
 कदंबमाला त्वं देवी कदंबकाननेपि च ।
 राज्यलक्ष्मी राजगेहे गृहलक्ष्मी गृहे गृहे ॥
 इत्युक्त्वा देवतास्सर्वे मुनयो मानवस्तथा ।
 रुरुदुर्नम्रवदनाश्शुष्ककंठोष्ठतालुकाः ॥
 इति लक्ष्मीस्तवं पुण्यं सर्वदेवैः कृतं शुभम् ।
 यः पठेत्प्रातस्तथाय सर्वैस्सर्वं लभेद्भवं ॥
 अभार्यो लभते भार्या विनोतां ससुतां सतीम् ।
 सुशीलां सुन्दरीं रम्यामति सुप्रियवादिनीम् ॥

पुत्रपौत्रवतीं शुद्धां कुलजां कोमलां वराम् ।
 अपुत्रो लभते पुत्रं वैष्णवं चिरजीविनम् ॥
 परमैश्वर्ययुक्तं च विद्यावंतं यगश्चिनम् ।
 भ्रष्टराज्यो लभेद्राज्यं भ्रष्टश्रीर्लभते श्रियम् ॥
 हनवंधुलं भेद्वन्धुं धनभ्रष्टो धनं लभेत् ।
 कीर्तिहीनो लभेत्कीर्तिं प्रतिष्ठां च लभेद्भुवम् ॥
 सर्वमंगलदं स्तोत्रं शोकसंतापनाशनम् ।
 हर्षानन्दकरं शस्वधर्षमोक्षमुहृत्पदम् ॥



श्री महालक्ष्म्याष्टकम्

इन्द्र उवाच

नमोस्तु महामाये श्रीपीठे सुरपूजिते ।
 शृङ्खलचक्र गदाहस्ते महालक्ष्मीर्नमोस्तु ते ॥
 नमस्ते गरुडारूढे ढोलासुर भयंकरि ।
 सर्वपापहरे देवि महालक्ष्मीर्नमोस्तु ते ॥
 सर्वज्ञे सर्ववरदे सर्वदुष्ट भयंकरि ।
 सर्वदुःखहरे देवि महालक्ष्मीर्नमोस्तु ते ॥
 सिद्धिबुद्धिप्रदे देवि भुक्तिमुक्तिप्रदायिनि ।
 मन्त्रमर्ते सदा देवि महालक्ष्मीर्नमोस्तु ते ॥
 आद्यन्तरहिते देवि आदिशक्ति महेश्वरि ।
 योगज्ञे योगसम्भूते महालक्ष्मीर्नमोस्तु ते ॥
 स्थूलसूक्ष्म महारौद्रे महाशक्ते महोदरे ।
 महापापहरे देवि महालक्ष्मीर्नमोस्तु ते ॥
 पद्मासनस्थिते देवि परब्रह्म स्वरूपिणि ।
 परमेशि जगन्मातः महालक्ष्मीर्नमोस्तु ते ॥
 श्वेतांबरधरे देवि ननालंकार भूषिते ।
 जगस्थिते जगन्मातर्महालक्ष्मीर्नमोस्तु ते ॥
 महालक्ष्म्याष्टकं स्तोत्रं यः पठेद्भक्तिमान्नरः ।
 सर्वसिद्धि मवाप्नोति राज्यं प्राप्नोति सर्वदा ॥
 एककाले यः पठेन्नित्यं धनधान्य समन्वितः ।
 द्विकालं यः पठेन्नित्यं धनधान्य समन्वितः ॥
 त्रिकालं यः पठेन्नित्यं महाशत्रु विनाशनम् ।
 महालक्ष्मीर्भवेन्नित्यं प्रसन्ना वरदा शुभा ॥

श्रीवेङ्कटेश्वर के मंदिर में नित्यकटल पूजा और दर्शन वगैरह

शनीचर से बुधवार तक

सबेरे 3-00 बजे से 3-30 बजे तक	सुप्रभात
„ 3-30 „ 5-30 „	विश्वरूप सर्वदर्शन
„ 5-45 „ 6-30 „	तोमाल सेवा
„ 6-45 „ 7-30 „	अर्चना
„ 7-30 „ 8-00 „	सातुमुरै
„ 8-00 „ 12-00 „	सर्वदर्शन
दोपहर 12-00 „ 12-30 „	एकांत सेवा
„ 12-30 „ 6-30 „	सर्वदर्शन
„ 6-30 „ 7-30 „	कैकर्य
„ 7-30 „ 10-00 „	सर्वदर्शन
„ 10-30 „	एकांत सेवा

गुरुवार

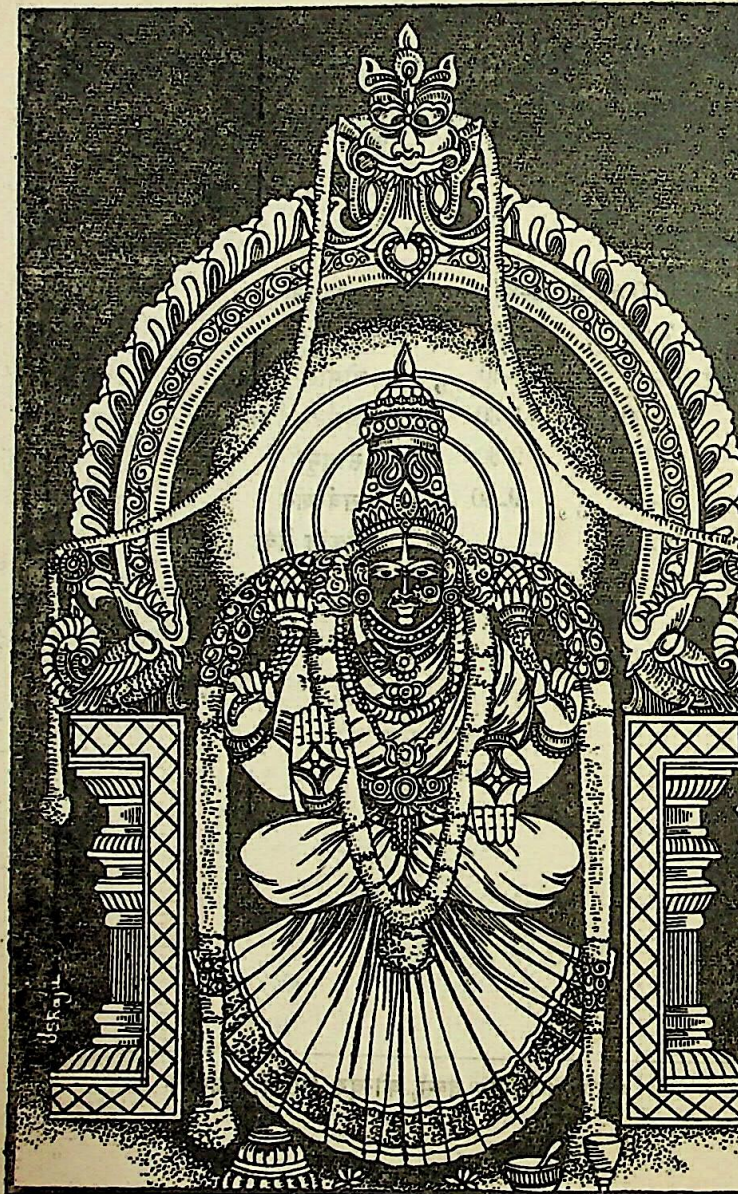
सबेरे 3-00 बजे से 8-30 बजे तक	सुप्रभात
„ 3-30 „ 5-30 „	विश्वरूप सर्वदर्शन
„ 5-45 „ 6-30 „	तोमाल सेवा
„ 6-45 „ 7-30 „	अर्चना
„ 7-30 „ 8-30 „	सातुमुरै
„ 8-00 „ 11-00 „	सर्वदर्शन

दोपहर	11.00 से 12-80 तक	सल्लिपु अर्चना (प्राइवेट)
"	12-80 से 5-80 "	सर्वदर्शन
"	8-00 से 9-80 "	पूलंगि दर्शन (आजितं)
"	10-80	एकांत सेवा (आजितं)

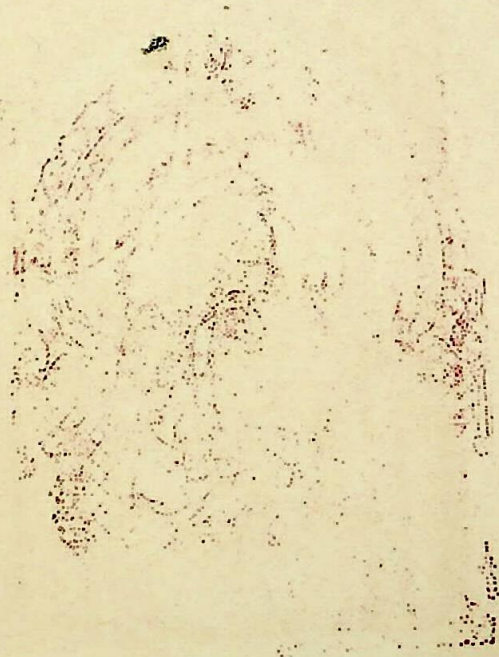
शुक्रवार

सवेरे	4-00 बजे से 4-80 बजे तक	सुप्रभात
"	7-00 " 9-80 "	अभिषेक
दोपहर	12-00 " 12-80 "	तोमाल सेवा
"	1-00 " 1-80 "	अर्चना (प्राइवेट)
"	2-00 " 2-80 "	सातुमुरै
"	2-80 " 9-80 "	सर्वदर्शन
"	10-30	एकांत सेवा (प्राइवेट)

श्री लता प्रिंटिंग वर्क्स, कोव्वूर (प. गो. जिला)



ॐ नमो भगवते वासुदेवाय



ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

★ श्री वेंकटेश्वरा सुप्रभातम् ★

दाम रु. १-००



गोक्षपूडि वीराश्वामि सन,
श्री सीतारामा नुरु दिपो,
पोचीस्ट्रीट : राजमहेंद्री-१ (आंध्र प्रदेश)